Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-4 'नेता जी का चश्मा' (कहानी) लेखक - स्वयं प्रकाश

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या-20 में दिए पाठ-4 'नेता जी का चश्मा' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम पाठ-4 'नेता जी का चश्मा' नामक कहानी का आरंभ करने जा रहे हैं। आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक तथा उत्तर-पुस्तिका निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे पाठ से ही संबंधित कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनोगे एवं समझोगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

स्वयं प्रकाश जी द्वारा रचित कहानी 'नेता जी का चश्मा' हर भारतीय के भीतर देशभक्ति की भावना और अपने स्वतन्त्रता सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव जागृत करने का प्रयास करती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि जब हम किसी महापुरुष की प्रतिमा की स्थापना करते हैं तो इसका उद्देश्य यह होता है कि उन महान व्यक्ति की स्मृति हमारे मन में बनी रहे। हमें यह स्मरण रहे कि उन महापुरुष ने

देश व समाज के हित के लिए किस प्रकार के महान कार्य किए। उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर हम भी अच्छे कार्य करें जिससे समाज एवं राष्ट्र का भला हो। हमारा उस प्रतिमा के प्रति यह उत्तरदायित्व होना चाहिए कि हम उस प्रतिमा की गरिमा का ध्यान रखें। हम न तो स्वयं उस प्रतिमा का अपमान करें, न ही उसे क्षति पहुँचाएँ और न ही दूसरों को ऐसा करने दें। हम उस प्रतिमा के प्रति पर्याप्त श्रद्धा प्रकट करें एवं उन महापुरुष के आदर्शों पर स्वयं भी चलें तथा दूसरों को भी चलने के लिए प्रेरित करें।

बच्चो! कहानी को विस्तार से समझने से पहले कहानी के पात्रों के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इस कहानी के पात्र हैं :- हालदार साहब, कैप्टन चश्मेवाला तथा पानवाला। आइए, अब एक-एक करके इन पात्रों के चरित्र के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

पात्रों का चरित्र-चित्रण

(i) हालदार साहब - हालदार साहब अच्छे पद पर कार्यरत हैं। वे अपने काम के सिलसिले में इस कस्बे से हर पंद्रहवें दिन गुज़रते हैं। वे देशभक्त हैं तथा देशभक्तों का सम्मान करते हैं। उन्हें पानवाले के द्वारा कैप्टन का मज़ाक उड़ाना अच्छा नहीं लगता है। वे भावुक और संवेदनशील भी हैं। उन्हें उन लोगों के बारे में सोचकर दुःख होता है जो शहीदों का मज़ाक उड़ाते हैं और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ते हैं।

(ii) कैप्टन चश्मेवाला - कैप्टन चश्मेवाला अपने नाम के विपरीत एक बेहद मरियल-सा लंगड़ा आदमी था, जिसने सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा पहने हुए था। उसके एक हाथ में छोटी-सी संदूक थी और दूसरे हाथ में एक बाँस पर बहुत से चश्मे टाँगे घूमता था। उसकी दुकान नहीं थी वह फेरी लगाकर चश्मे बेचता था। अपनी देशभक्ति और नेताजी के प्रति सम्मान की भावना के कारण वह नेता जी की मूर्ति को बिना चश्मे के देख नहीं पाता था और अपने फ्रेमों में से एक फ्रेम उन्हें लगाकर उनके प्रति

आदर प्रकट करता था।

उ. पानवाला - पानवाला काला, मोटा और खुशमिज़ाज व्यक्ति था। वह हमेशा पान खाता रहता था। उसके हँसने से उसकी तोंद हिलती थी। लगातार पान खाते रहने से उसके दाँत लाल-काले हो रहे थे। वह कैप्टन का मज़ाक उड़ाता था और उसे पागल कहता था पर कैप्टन की मौत पर उसकी आँखें नम हो गई थीं।

बच्चो! अब कहानी को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। हालदार साहब को कंपनी के काम से हर पंद्रहवें दिन उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था। कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। उसमें कुछ मकान ही पक्के थे। एक ही बाज़ार था। लड़के-लड़कियों का एक-एक स्कूल, सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी। इस कस्बे की नगर-पालिका कुछ न कुछ करती रहती थी। कभी किसी सड़क को पक्का करवा देती, कभी कुछ पेशाबघर बनवा देती, कभी कबूतरों की छतरी बनवा देती तो कभी कवि सम्मेलन करवा देती थी। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने कस्बे के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। यह कहानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा के एक हिस्से पर ही आधारित है।

ऐसा लगता है कि देश के अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी न होने के कारण और अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान उपलब्ध बजट से अधिक होने के कारण मूर्ति बनाने का कार्य स्थानीय कलाकार को देना पड़ा। मूर्ति बनाने का कार्य हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल जी को दे दिया गया। वस्तुतः वे कोई मूर्तिकार नहीं थे। अतः दिए गए समय में ही मोतीलाल जी ने जैसे-तैसे मूर्ति बना दी। इस मूर्ति की बनावट में इतनी सफ़ाई नहीं थी। इस कारण यहाँ लेखक द्वारा

मूर्ति बनाकर पटक देने की बात कही गई है। मूर्ति संगमरमर की थी। मूर्ति टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची थी। नेता जी फौजी वर्दी में सुन्दर लग रहे थे। मूर्ति को देखते ही जोशपूर्ण नारे याद आते :- 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूगा'। मूर्ति में एक कमी रह गई थी कि नेता जी की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

बच्चो ! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी, जिनके उत्तर आपको तीन मिनट के अंतर्गत लिखने हैं। प्रश्न सुनकर आप तीन मिनट के लिए रुकेंगे और उत्तर लिखना आरंभ करेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. हालदार साहब जिस कस्बे से गुजरते थे, वह कैसा था?
प्रश्न 2. कस्बे में किसकी मूर्ति थी ?
प्रश्न 3. यह मूर्ति किसने बनाई थी ? इसकी क्या विशेषता थी ?

बच्चो ! उत्तर लिखने की अवधि अब समाप्त हो चुकी है। आशा है कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. हालदार साहब जिस कस्बे से गुज़रते थे, वह बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक स्कूल लड़कों का और दूसरा लड़कियों का, सीमेंट का एक छोटा-सा कारखाना दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक नगरपालिका थी, जो कुछ न कुछ काम कस्बे में करवाती रहती थी।

उत्तर 2. मूर्ति नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की थी और वह मूर्ति शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर लगाई गई थी।

उत्तर 3. यह मूर्ति हाई स्कूल के इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने बनाई थी। मूर्ति की विशेषता यह थी कि मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे

खून दो' जैसे नारे याद आने लगते थे।

बच्चो ! अब पृष्ठ संख्या-21 को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। हालदार साहब उस कस्बे से हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में गुज़रते थे। जिसके मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवाई गई थी। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे तो उन्होंने पाया कि मूर्ति तो संगमरमर की है, पर उसकी आँखों पर संगमरमर का चश्मा न होकर एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम पहना दिया गया है। यह देखकर उनके चेहरे पर एक कौतुक (अचंभा) भरी मुसकान फैल गई। उन्होंने कहा भई ! वाह यह विचार भी अच्छा है। मूर्ति पत्थर की लेकिन चश्मा सचमुच का।

जब हालदार साहब की जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी वे मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए क्योंकि महत्त्व मूर्ति के रंग रूप का या कद का नहीं होता बल्कि उनके अनुसार महत्त्व उस भावना का था जिस भावना से उस बिना चश्मे वाली पत्थर की मूर्ति को एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का फ्रेम पहना दिया गया था, वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। इस बात से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि वर्तमान स्थिति में यदि कोई देशभक्त बनता भी है तो वह मूर्ख कहलाता है। देश के लिए कोई गीत न जाने कितने बनवालें पर देश के हित के लिए प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। आज के समय में देशभक्ति की भावना को ही मज़ाक की चीज़ बना दिया गया है।

हालदार साहब जब दूसरी बार कस्बे से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा था अर्थात् बदल दिया गया था।

पहली बार जब उन्होंने मूर्ति को देखा था तो मूर्ति की आँखों पर एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम लगा हुआ था परन्तु अब (दूसरी बार) तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा था। वे हैरान हुए कि मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती पर चश्मा तो बदल ही सकती है।

बच्चो ! आज हम अपने इस पाठ को यहीं विराम देते हैं। शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ाया जाएगा। सभी छात्र इस पाठ को पृष्ठ संख्या इक्कीस तक ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं समझेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य देने जा रही हूँ। इस कार्य को सभी छात्र अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"हालदार साहब को हर पंद्रहवें दिन कंपनी के काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुज़रना पड़ता था।"

(i) कस्बे की क्या - क्या विशेषताएँ थीं ?
(ii) 'नगरपालिका भी कुछ न कुछ करती रहती थी' - स्पष्ट कीजिए।
(iii) सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा किसने, कहाँ लगवाई ? उसे बनाने का काम किसे सौंपा गया और क्यों ?
(iv) नेता जी की मूर्ति की क्या विशेषताएँ थीं ? मूर्ति में किस चीज़ की कमी थी ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]